# प्रथम अध्याय

# प्रथम अध्याय

# पद्माशा तथा सानिया का व्यक्तित्व एवं कृतित्व : तुलनात्मक अनुशीलन

## 1. डॉ. पद्माशा झा :

### 1.1 व्यक्तित्व परिचय :

ऐसा कहा जाता है कि वक्ता का परिचय उसके वक्तव्य से होता है, किसी गायक की पहचान उसके सूरों को सुनने के बाद होती है, ठीक उसी प्रकार किसी कृतिकार के व्यक्तित्व को आप जानना चाहते हैं, तो उनकी कृतियाँ ही उनके व्यक्तित्व की पहचान होती हैं । इसीलिए 'गजानन माधव मुक्तिबोध' लिखते हैं - ''कवि कथ्य के माध्यम से अपने अनजाने अपना चरित्र कर जाता हैं ''[1] अत: यह स्पष्ट है कि रचनाकार के जीवन एवं व्यक्तित्व की उपेक्षा करके उसकी रचनाओं को समग्रत: हृदयंगम नहीं किया जा सकता । साहित्यलोचन में अब इसी कारण साहित्यकार के व्यक्तित्व का आयाम अनुपेक्षणीय हो गया है । इसी व्यक्तित्व के महत्त्वपूर्ण पहलुओं को यहाँ उजागर किया है ।

कविता के शब्दों से उतरकर जो लेखनी कहानी की दुनिया में विचर रही है - वह कहानी में भी काव्य की लय और धारा को सरिता की तरह प्रवाहित करती चलती है । मुख्य रुप से कवयित्री के रुप में चर्चित 'डा. पद्माशा झा' एक सुघड़ एवं संवेदनशील कहानी लेखिका भी हैं और इनकी कथाओं की समीक्षकों द्वारा भूरि-भूरि सराहना की गई है । प्रसिद्ध कथाकार मधुकर सिंह ने इनकी पहली पुस्तक ''छोटे शहर की शकुंतला'' पर समीक्षा लिखते हुए उनके व्यक्तित्व पर भी एक टिप्पणी की थी - ''कभी न झुकनेवाली शकुंतला''[2]

पद्माशा झा एक नयी और उभरती लेखिका के रुप में सामने आ रही है । उनके व्यक्तित्व के अनेक पहलु हैं । वे एक सफल कवयित्री हैं, एक सफल समाज सुधारक भी हैं, बिहार विधान परिषद की सदस्या हैं और बाबासाहब आंबेडकर बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर बिहार में प्रोफेसर पद पर कार्यरत हैं । पद्माशा जी ने अपनी कहानियों के माध्यम से समाज के हर पहलु को

---

1. गजानन माधव मुक्तिबोध - कामायनी, एक पुनर्विचार, पृ.-149 ।
2. पद्माशा झा (कथन०मधुकर सिंह) - तुम बहुत याद आयोगे, पृ.- मुखपृष्ठ ।

दिखाया है । उनके कहानियों में मध्यवर्गीय बुद्धिजीवी नारी पात्रों का चरित्र उभरकर आया है । विविध आयामों में उनकी मन:स्थितियाँ परिलक्षित होती हैं । वे सभी अपने प्रतिकूल परिवेश के विरुद्ध संघर्ष करती, समाज में अपनी अलग पहचान बनाती हुई दिखाई देती है ।

### 1.1.1 जन्म :

पद्माशा जी का जन्म बिहार के सीतामढ़ी जिला में (जो तब मुजफ्फरपुर जिला था, बाद में इसे काट कर सीतामढ़ी बनाया गया ।) गाढ़ा ग्राम में सन् 4 अप्रैल, 1947 को हुआ ।

### 1.1.2 नाम तथा बाल्यकाल :

डॉ. पद्माशा का नाम उनकी माता ने रखा था । वह घर में सबसे बड़ी होने के कारण उनका बचपन बहुत लाड़-प्यार में बिता । सुबह-सुबह हरे खेतों में दौड़ जाना फूलों की बाग में रंग बिरंगी तितलियाँ पकड़ना, हरसिंगार के फूल चुनकर माला गुँथना और गुड़ियाँ का ब्याह रखना यह उनके बाल्यकाल का नित्यक्रम था । पिताजी के बाहर जाते ही तालाब में तैराकी करना - आम के बाग में लुका-छिपी खेलना या खट्टे आमिया नम्क लगाकर खाना । माँ की पुकार को अनसुना करते हुए दिनभर धूप में दौड़ते फिरना । ढ़ेर सारे खेल, ढ़ेर सारी बातों का आनंद उन्होंने अपने बचपन में लिया हैं । लेकिन नौं साल के बाद वह इस आनंद को तरस गई । क्योंकि उन्हें शिक्षा के लिए होस्टेल में रख दिया गया । बोर्डिंग का क्रुर अनुशासन पद्माशा जी के बचपन को आहत करता था । सुबह उठो, फिर प्रार्थना, फिर कसरत, फिर चाय, फिर स्टडी तब जाकर दो पराठों या दो बटर टोस्ट का नाश्ता, स्कूल से लौटकर बस्ता कन्धे से उतारते हीं फिर वही नियमों की पाबंदियॉ - चने की घुघनी खाओ, एक घंटा खेलो, फिर पढ़ाई, बाद में पाँत में बैठकर भोजन, सोने से पहले प्रार्थना । बचपन में ही उनका जीवन एक मशीन की तरह बन गया । इसतरह पद्माशा जी का बाल्यकाल रहा ।

### 1.1.3 माता-पिता :

पद्माशा जी के पिता पंडित पद्नाम शर्मणा: झा तथा माता श्रीमती पद्मिनी शर्मा के नाम से जाने जाते हैं । पिता जमीनदारों का जीवन बिताते थे और माता पद्मिनी देवी विदुषी एवं कर्मठ महिला थी वे बिहार सरकार में कन्या उच्चतर विद्यालय की प्राचार्या पद से सेवा निवृत्त हुई हैं ।

### 1.1.4 भाई- बहन :

पद्माशा जी भाई-बहनों में सबसे बड़ी हैं । उनकी दो छोटी बहनें हैं । 1. डॉ. पद्रेखा झा, वे मंडल विश्वविद्यालय के टी.पी. कॉलेज में इतिहास की विभागाध्यक्षा हैं । 2. डॉ. पद्लता

ठाकुर बिहार के पटना विश्वविद्‌यालय में इतिहास की प्रोफेसर है और भ्राता श्री पद्‌वीर शर्मा सीतागढ़ी में अधिवक्ता है ।

### 1.1.5 शिक्षा :

पद्‌माशा जब नौं साल की थी तो होस्टेल में पढ़ने के लिए भेज दी गई जो पद्‌माशा को बिलकुल अच्छा नहीं लगा पर पढ़ना तो था हीं । गाँव में अच्छे स्कूल न होने के कारण पिता चाहते थे कि वह पढ़ लिखकर कुछ अच्छा करें । इसलिए उन्होंने पद्‌माशा को पटना बी.एन.आर. ट्रेनिंग स्कूल फिर राजस्थान में वनस्थली विद्‌यापीठ स्कूल की बोर्डिंग में डाल दिया गया । बाद में उन्होंने बिहार विश्वविद्‌यालय में इतिहास विष्य लेकर एम्.ए. किया । फिर बाद में उन्होंने पीएच.डी. उपाधि प्राप्त कर ली । उनकी शिक्षा दीक्षा में माँ ने जबर्दस्त भूमिका निभाई । माँ के ही कठिन परिश्रम की देन पद्‌माशा की उच्चशिक्षा है ।

### 1.1.6 पारिवारिक स्थिति तथा विवाह :

पद्‌माशा जी का परिवार शिक्षा प्रधान है । उनके पूज्य पितामह स्व. महामहोपाध्याय विद्‌यावाचस्पति (पदवी) पंडित मधुसूदन झा शर्मणा : संस्कृत एवं वेदान्त ज्योतिष विज्ञान के प्रकांड पंडित थे । वे उम्रभर जैचुर के राजा मानसिंह के राजगुरु रहें । उन्हें ब्रिटीश महारानी एलिझाबेथ एवं चार्ल्स की ताजपोशी में इग्लैंड से आमंत्रण मिला था और वे वहाँ भाग लेने गए थे । उनकी पांडुलिपियाँ दिल्ली के राष्ट्रीय संग्रहालय तथा दरभंगा के राज पुस्तकालय में संग्रहित हैं । वेद एवं फलित ज्योतिष पर उन्होंने सैकड़ों पुस्तकें लिखी हैं।

उनकी मृत्यु के पश्चात उनके इकलौते पुत्र, पद्‌माशा के दादा स्व. प्रदुम्न शर्मणा: एवं पद्‌माशा के पिता श्री. पद्‌नाम शर्मणा: विद्‌या की उस ऊँचाई तक नहीं जा सके क्योंकि पद्‌माशा के पितामह द्‌वारा अर्जित अतुल धनराशि के उपभोग ने उन्हें आराम पसंद बना दिया एवं वे जमीदारों की तरह जीवन जी ने के आदी हो गए । किन्तु उनकी दादी एवं माँ के कठिन परिश्रम की ही देन पद्‌माशा तथा उनके भाई-बहनों की शिक्षा-दीक्षा थी । पद्‌माशा जी ने एम्.ए. पूरा किया तब उनकी शादी डा. झा से हो गई । डॉ. झा पेशे से डॉक्टर हैं । उनको एक ही बेटा है 'श्वेताभ' । वह भी डॉक्टर है और अभी आखिल भारतीय आर्युविज्ञान संस्थान, नयी दिल्ली में ज्यूनियर रेजिडेंट पद पर पदस्थापित है

UNIVERSITY

### 1.1.7 प्रेरणा :

पद्‌माशा को बचपन में ही होस्टेल में रख दिया, यहीं उनके काव्य एवं कहानियों की शुरुआत थी । होस्टेल का क्रुर अनुशासन उनके बचपन को आहत कर देता था । इसीकारण माँ और घर की, गाँव की याद आती थी । वचपन में ही सोच-सोचकर अकेले में आँखें भर आती थी । एक दिन उन्होंने अपनी माँ को एक पत्र लिखा । उसमें तब का चला हुआ फिल्मी गीत की दो पंक्तियाँ लिख दी -

''डाली से फूल टूटे
अब कैसे खिल सकेंगे
तुम मुझको भूल जाओ
अगर हम न मिल सकेंगे''

इसके साथ एक फूल की डाल का चित्र बनाकर फूल नीचे टूटकर गिरा हुआ दिखा दिया । तब वह तीसरी कक्षा में पढ़ती थी । यह खत जब घर पहुँचा तो स्वभावत: पिताजी के हाथ में पहले पहुँचा । बस इस बात से घर में बवाल हो गया । पिताजी खत पढ़कर आग बबूल हो गए और माँ को बुरा भला कहने लगे । उनके अनुसार माँ ने ही ऐसे लिखने की राह दी थी । माँ कविता लिखती थी और पिताजी का मानना था कि कविता लिखने वाला बर्बाद हो जाता है और कभी अपना कैरियर नहीं बना पाता । लेकिन वह बर्बादी होनी थी और जिंदगी में उन्हें कविता आती गई । उन्हें कविता लिखने की प्रेरणा उदास ज़िन्दगी से मिली । बचपन में माता-पिता के आपसी वैमनस्य के कारण घर में वह सहज वातावरण नहीं मिला जो एक सामान्य स्वस्थ बच्चे को मिलना चाहिए । यहीं से शुरु होती है जिन्दगी का तनहा सफर और कविता के माध्यम से अभिव्यक्तियों का एक अनवरत सिलसिला ।

बाद में जैसे-जैसे कविताएँ लिखती गई वैसे ही धर्मवीर भारती, मनोहरश्याम जोशी, राजेंद्र अवस्थी, मृणाल पांडे से पद्‌माशा को लेखन में प्रेरणा मिलती गई । उन्हें साहित्य में सर्वप्रथम निराला, जैनेंद्र, अज्ञेय, सर्वेश्वर दयाल सक्सेना तथा जानकी वल्लभशास्त्री ने प्रभावित किया ।

### 1.1.8 स्वभाव :

पद्‌माशा जी का स्वभाव भावुक दयालु तथा प्रतिक्रियावादी है । अन्याय या किसी चीज को गलत देखकर विरोध करना पद्‌माशा का स्वभाव है । वह जल्द क्रोधित होती है, यह उनके स्वभाव का बुरा पक्ष है ।

## 1.2 कृतित्व :

डॉ. पद्‌माशा मुख्य रुप से कवयित्री के रुप में उभरकर आई हैं । बाद में उनकी कविताओं से ही प्रेरणा लेकर उन्होंने कहानियाँ भी लिखी । उनका पहला कविता संग्रह ''भाषा से नंगे हाथों तक'' सन् 1974 में छपा । इस पुस्तक में छपी कविताओं की सराहना जनवादी कवि सर्वेश्वर दयाल सक्सेना द्‌वारा की गई । स्व. अज्ञेय ने अपनी पत्रिका ''नया प्रतीक'' में उनकी कई कविताओं को प्रकाशित किया । पद्‌माशा प्रगतिशील एवं जनवादी विचारों से प्रभावित थी । साप्ताहिक हिन्दुस्तान, कादम्बिनी, धर्मयुग आदि साहित्यिक पत्रिकाओं के लिए भी वह बार-बार लिखती आयी हैं । उन्होंने इसके अलावा इतिहास की भी पुस्तकें लिखी हैं । पहली पुस्तक 'इन्डियन नेशनल कांग्रेस एन्ड द मुस्लिम' सन् 1980 में छपी और पुन: दुसरा संस्करण सन् 1985 में छपा । जिसका लोकर्पण श्रीमती इन्दिरा गांधीजी ने किया था । इसके अलावा उन्होंने राजीवजी पर एक पुस्तक लिखी - 'राजीव गांधी का नेतृत्व' । इसके कारण वह राजीवजी के राजनीतिक जगत से भी जुड़ी हुई थी और उन्हीं के प्रेरणा से कांग्रेस की राजनीति में सक्रिय रहीं ।

उन्होंने मौलिक तथा अनूदित पंद्रह पुस्तकों की रचना कर अपने असाधारण व्यक्तित्व तथा प्रतिभा का परिचय दिया है । इनमें से कुछ प्रकाशित तो कुछ अप्रकाशित रही हैं ।

### 1.2.1 काव्यसंग्रह :

1. भाषा से नंगे हाथों तक ।
2. पोखर ।
3. पलाशवन ।
4. मत बाँधो आकाश ।

### 1.2.2 कहानीसंग्रह

1. छोटे शहर की शकुंतला ।
2. तुम बहुत याद आओगे ।
3. चिनार के पत्ते उदास । (शीघ्र प्रकाश्य)

### 1.2.3 उपन्यास :

1. एक तनहा सफर ।

### 1.2.4 बालकथाएँ :

1. सोनजुही ।

### 1.2.5 इतिहास :

1. इण्डियन नेशनल कांग्रेस एवं मुस्लिम ।
2. आधुनिक भारत के सौ वर्ष ।
3. भारत तथा विश्व में नारी का स्थान ।
4. अब्दुल कलाम आजाद की उपलब्धियाँ (प्रकाश्य)
5. राजीव गांधी का नेतृत्व (पुरस्कृत)

## 2. सानिया :

### 2.1 व्यक्तित्व परिचय :

मनुष्य का व्यक्तित्व उसके बाह्य पक्ष तथा आंतरिक पक्ष के रुप में दिखाई देता है, जो एक-दूसरे से पूरक है । मनुष्य के बाह्य पक्ष में मनुष्य का शरीर गठन, वेशभूषा, रहन-सहन, बोलचाल, व्यवहार आदि आते हैं । मनुष्य के व्यक्तित्व के संबंध में श्री. राम वशिष्ठ जी ने लिखा हैं -

''मनुष्य के व्यक्तित्व के निर्माण में उसके जीवन की विभिन्न परिस्थितियाँ और उसके चारों ओर के वातावरण का महान योग होता है । पारिवारिक जीवन उसका मूलाधार है ।''[1]

उपर्युक्त कथनानुसार सानिया जी के व्यक्तित्व निर्माण में परिवार और आस-पास के समाज जीवन के वातावरण का योगदान रहा है । सानिया जी का व्यक्तित्व आकर्षक और प्रभावशाली है । उनका व्यक्तित्व शांति, सरलता, सभ्यता के साथ ही विद्वत्ता तथा प्रतिभा संपन्नता से परिपूर्ण दिखाई देता है । सानिया के आधुनिक और नारीवादी विचार हैं । मराठी साहित्य में सानिया जी का नाम एक आदब से लिया जाता है ।

### 2.1.1 जन्म तथा नाम :

सानिया जी का जन्म 10 नवंबर 1952 को महाराष्ट्र के सांगली में हुआ । उनका नाम सुनंदा कुलकर्णी था । उनका बचपन सांगली में बिता । उन्होंने बाद में अपना नाम बदलकर सानिया नाम से ही पूरे मराठी साहित्य में अपनी अलग पहचान बनाई है ।

---

1. सम्पा. अमरनाथ - डा. रांगेय राघव - साहित्यकार एवं व्यक्ति, पृ.-10 ।

### 2.1.2 शिक्षा :

सानिया जी एम्.कॉम. उत्तीर्ण है । उन्होंने पुणे विश्वविद्यालय से सन् 1972 को बी.कॉम. उत्तीर्ण किया और 1974 को मुंबई विश्वविद्यालय से एम्.कॉम्. उत्तीर्ण किया । पिताजी की नौकरी में हमेशा तबादला होता रहा इसी कारण उनको अपनी शिक्षा भी हमेशा बदलनी पड़ी । उनकी शिक्षा पूणे, नाशिक, नागपुर, अमरावती तथा मुंबई में हुई ।

### 2.1.3 विवाह :

सानिया जी मुंबई में एम्.कॉम्. के बाद मुंबई में ही नौकरी करती थी । तभी उन्हें श्री. बलरामन मिले । जान पहचान प्यार में बदल गई और दोनों ने अंतरजातीय प्रेम विवाह किया । उसके बाद सानिया जी ने नौकरी छोड़कर परिवार में अपना ध्यान लगाया । वे बहुत साल बंगलोर में रहीं । लेकिन पति की नौकरी भी एक जगह पर ना होने के कारण उन्हें हमेशा अपना वास्तव्य कभी बंगलोर, कभी मद्रास तो कभी सिंगापुर, जपान में बदलना पड़ा । हमेशा उनके पति का अलग-अलग जगह पर तबादला होता रहा और वे अपना ठिकाना बदलते रहें ।

### 2.1.4 प्रेरणा :

सानिया जी के पिताजी और पति दोनों के नौकरी में अस्थिरता होने के कारण उन्हें हमेशा अलग-अलग जगहपर ठहरना पड़ा । यही बात उनके लेखन के लिए प्रेरणा थी । उनका वास्तव्य जपान तथा सिंगापुर में भी रहा । लेकिन उन्होंने अपने मराठी साहित्य को नहीं छोड़ा । इसी कारण उनके कहानियों की नारी सिर्फ मराठी नहीं होती तो हर अलग-अलग प्रदेश की होती हैं । सानिया जी इस बारे में कहती है कि, - "या फिरण्यामुळे माझ्या लेखनातील स्त्री केवळ मराठी नसते. ती कुठेही असू शकते. मात्र मूळ जाणिवा साऱ्या स्त्रियांच्या समान असतात."[1] सानिया जी को प्रेरणा उनके जीवन शैली से ही मिली ।

### 2.1.5 पुरस्कार एवं सम्मान :

आधुनिक मराठी साहित्य में सानिया का नाम एक लब्ध-प्रतिष्ठ कथाकार और उपन्यासकार के रुप में सुपरिचित हैं । उनकी अनेक रचनाएँ बहुचर्चित रही हैं । श्री. पु. भागवत, श्रीनिवास कुलकर्णी, मंगेश पाडगांवकर, गौरी देशपांडे, रेखा साने तथा म. द. हातकणंगलेकर जी ने सानिया के कृतियों की भूरि-भूरि प्रशंसा की हैं । अनेक सरकारी और गैर सरकारी पुरस्कारों से उनकी रचनाएँ

---

1. सानिया - सानियाद्वारा भेजा हुआ खत ।

सन्मानित हुई हैं ।

1. सानियाजी को 'सार्वजनिक वाचनालय, नासिक' की तरफ से दिया जानेवाला डॉ. अ. बा. वर्टी कथालेखक पुरस्कार से 1990 में सन्मानित ।
2. राज्य शासन पुरस्कार से सन्मानित ।
3. साहित्य परिषद से सन्मानित ।
4. जयवंत दळवी स्मृति पुरस्कार से सन्मानित ।

## 2.2 कृतित्व :

सानिया का समस्थ कथा-संसार मूलत: घर -परिवार में जीवन यापन करने वाली नारी को उसकी नानाविध भावस्थितियों के साथ प्रस्तुत करता हैं । नारी की कतिपय स्वाभाविक बैचेनियों, सामान्य आशा आकांक्षाओं, विचारों, विकारों सहित उसके आत्मिक अनुशीलन को बोध और अबोध के स्तरों पर देखने परखने का उनका कलात्मक प्रयास लक्षणीय हैं । उनकी कहानियों में तथाकथित नारीवादी आंदोलन का सस्ता आक्रोश नहीं है, बल्कि गहन गंभीर नारीवादी चेतना का सहजोत्स्फूर्त और मनोहर तंत्रीनाद हैं । यह कहना अत्युक्ति नहीं होगी कि कुल जीवन के प्रति एक नए अभियान को कहानियों का कथ्य बनाकर 'सानिया' ने मराठी कहानी का चेहरा ही बदल दिया है । 'स्वतंत्र रुप से सोच सकनेवाली नारी उनकी कहानियों में प्रधान पात्र बनकर आती है । नीति-अनीति के परंपरागत पचड़ो, नारी शोषण दमन के कुचक्रों और नये-पुराने के संघर्षो की पृष्ठभूमि पर सानिया ने नारी की उस विराट प्रतिमा को प्रकाशित किया है जो पूर्ण तथा व्यक्तित्व संपन्न होकर भी सामाजिक इकाइयों से हटकर नहीं हैं ।

सानिया जी के आधुनिक कथालेखन के कारण मराठी साहित्य पर पाश्चात्य विचारों का हावी होना स्पष्ट दिखाई देता है । उन्होंने बीस से अधिक कहानीसंग्रह, उपन्यास, अनुवाद और काव्यसंग्रह को लिखकर मराठी साहित्य में अपना स्थान प्रबल बनाया है ।

उनका कृतित्व इस तरह हैं -

**2.2.1 कहानीसंग्रह :**

| | | | |
|---|---|---|---|
| 1. | शोध | - | सन् 1980 |
| 2. | प्रतीती | - | सन् 1989 |
| 3. | खिडक्या | - | सन् 1989 |
| 4. | दिशा घराच्या | - | सन् 1991 |
| 5. | ओळख | - | सन् 1992 |
| 6. | भूमिका | - | सन् 1994 |
| 7. | वलय | - | सन् 1995 |
| 8. | परिमाण | - | सन् 1996 |
| 9. | प्रयाण | - | सन् 1997 |
| 10. | ओमियागे | - | सन् 2004 |

**2.2.2 उपन्यास :**

| | | | |
|---|---|---|---|
| 1. | स्थलांतर | - | सन् 1994 |
| 2. | आवर्तन | - | सन् 1996 |
| 3. | अवकाश | - | सन् 2001 |

**2.2.3 अनुवाद :**

| | | | |
|---|---|---|---|
| 1. | वाट दीर्घ मौनाची | - | सन् 1996 |

**2.2.4 काव्यसंग्रह :**

| | | | |
|---|---|---|---|
| 1. | अस्तित्व | - | सन् 2000 |

**समन्वित तुलनात्मक अनुशीलन :**

डॉ. पद्माशा तथा सानिया जी के व्यक्तित्व और कृतित्व के अध्ययन के पश्चात यह ज्ञात होता है कि डॉ. पद्माशा जी मुख्य रुप से कवयित्री के रुप में चर्चित एक सुघड़ एवं संवेदनशील कहानी लेखिका हैं । तथा सानिया जी का स्थान मराठी साहित्य जगत में अग्रस्थान पर लिया जाता है । वह एक आधुनिक एवं संवेदनशील लेखिका है । दोनों की कहानियों का प्रारंभ अत्यंत

बुद्धिमान और संवेदनशील नारी से शुरु होता है । अंत: वे दोनों भी नारीवादी लेखिका हैं । पद्‌माशा जी बिहार से है तथा सानिया जो महाराष्ट्र से है । पद्‌माशा जी का लेखन आधुनिक लेकिन परंपरा को संभालनेवाली नारी से शुरु होता है । तथा सानिया जी का लेखन आधुनिक नारी पारिवारिक रिश्तों में किस तरह जखड़ती जाती है इन पहलुओं से शुरुआत होती है ।

विवेच्य काहनीकारों के व्यक्तित्व और कृतित्व का अध्ययन करने के बाद जों साम्य-वैषम्य द्रष्टव्य होते हैं - वे इसप्रकार हैं -

**साम्य :**

1. पद्‌माशा तथा सानिया जी के लेखन का कालखंड एक ही है । दोनों ने भी सन् 1980 के बाद कहानी लिखना प्रारंभ किया ।
2. दोनों भी कहानी लेखिका के साथ-साथ कवयित्री भी हैं ।
3. दोनों के काहनियों की शुरुआत आधुनिक नारी से होती है ।

**वैषम्य :**

1. पद्‌माशा जी हिंदी की लेखिका हैं ।
   - सानिया जी मराठी लेखिका हैं ।
2. पद्‌माशा जी का जन्म 4 अप्रैल, 1948 का है ।
   - सानिया जी का जन्म 10 नवंबर, 1952 का है ।
3. पद्‌माशा जी बिहार की हैं ।
   - सानिया जी महाराष्ट्र से हैं ।
4. पद्‌माशा जी को पीएच. डी. उपाधि प्राप्त है ।
   - सानिया जी एम्.कॉम्. हुई हैं ।
5. पद्‌माशा जी की पूरी पढ़ाई छात्रावास में रहकर हुई हैं ।
   - सानिया जी की पढ़ाई जहाँ पिताजी का तबादला होता रहा, वैसे ही उनके छात्रावास बदलते गए ।
6. पद्‌माशा जी के पिता जमींदार थे ।
   - सानिया जी के पिता मध्यवर्गीय थे और नौकरी करते थे ।

7. पद्माशा जी बिहार विश्वविद्यालय में प्रोफेसर होने के साथ-साथ वह बिहार विधान परिषद की सदस्य भी हैं ।

- सानिया जी गृहिणी हैं और सिर्फ लेखन करती हैं ।

8. पद्माशा जी को उनके उदास जिंदगी से लिखने की प्रेरणा मिली है ।

- सानिया जी को बदलते जीवनशैली से लिखने की प्रेरणा मिली है ।

9. सानिया जी को विविध पुरस्कारों से सम्मानित हैं ।

- पद्माशा जी को अभी तक कोई पुरस्कार प्राप्त नहीं है ।

10. पद्माशा जी ने इतिहास विषय पर लेखन किया है ।

- सानिया जी ने ऐसा लेखन नहीं किया है ।

11. पद्माशा जी का विवाह घरवालों द्वारा तय करके हुआ है ।

- सानिया जी ने अंतरजातीय प्रेमविवाह किया है ।

****

SHIVAJI UNIVERSITY